वह भटका हुआ पीर

संस्मरण **डॉ राज बुद्धि राजा**

HSSLiVE.IN

लेखिका के बारे में:

डॉ राज बुद्धि राजा हिंदी के विख्यात लेखिका है। लगभग सभी साहित्यिक विधाओं में अपनी क्षमता दिखाई।उन्होने लगभग तीन सौ संस्मरण लिखे हैं।

भूमिका:

'वह भटका हुआ पीर ' अमृता प्रीतम की प्रसिद्ध संस्मरण हैं। दिल्ली की सड़कों पर जलती गरमी में राहगीरों की प्याक बुझानेवाले एक दयालु युवक की कहानी बताकर परोपकार का महत्व से संबंधित संस्मरण पढ़ें।

नीचे दिए गद्यांश से प्रश्नों का उत्तर ढूँढें:

(I) जब-जब ………….आगे बढ़ जाता।

(1) लेखिका को कब पीर की याद आती है?

अपने घर के आँगन में गुलमोहर खिलते वक्त लेखिका को पीर की याद आती है।

(2) अपने घर-आँगन में गुलमोहर खिलते वक्त लेखिका को पीर की याद आती है, क्यों?

प्यासों को पानी देकर भटनेवाले उस पीर से लेखिका की पहली मुलाकात खिला हुआ गुलमोहर की तरह तीक्ष्ण गर्मी की दोपहर में हुआ था। गुलमोहर और पीर में समानता यह है कि गुलमोहर राहगीरों को छाया देता है, तो वह युवक राहगीरों को पानी पिलाता था। इसलिए गुलमोहर खिलते वक्त लेखिका को वह पीर की याद आती है।

(3) गुलमोहर खिलते समय लेखिका को किसकी याद आती है?

राहगगीरों का प्यास बुझाकर भटकनेवाला पीर का।

(4) लेखिका स्कूटर की प्र तीक्षा में कहाँ खड़ी। कब?

चटख गुलमोहर की तरह तीक्ष्ण गर्मी में आँचल का छाता लिए सड़क के पटरी पर खड़ी।

(5) लेखिका स्कूटर की इंतज़ार करते वक्त उनके पास कौन आकर खड़ा हो गया?

एक स्कूटरवाला आकर खड़ा हो गया।

(6) "मेरे कानों में एक आवाज़ गूँजी" - किसकी आवाज़?

स्कूटरवाले की आवाज़।

(7) लेखिका के पास आकर स्कूटरवाले ने क्या कहा?

लेखिका के पास आकर स्कूटरवाले ने कहा - "कहाँ जाइएगा"।

(8) पहले तो लेखिका को क्यों विश्वास नहीं हुआ?

लेखिका के कानों में गूजा शब्द इतनी मधुर थी कि आजकल की कड़वी दुनिया में ऐसे मीठे स्वर सुनना असंभव है।

HSSLiVE.IN

HSSLiVE.IN

(9) लेखिका क्यों आश्चर्य हुई?

कलंक भरी दुनिया में कलंकित आवाज़ों के बीच जब मीठे स्वर सुनी तो लेखिका आश्चर्य हुई।

(10) स्कूटरवाला क्या कर रहे थे?

वह एकाध किलोमीटर में अपना स्कूटर रोकर राहगीरों की अँजरियों में मश्क से पानी उँडेलता लोगों की प्यास बुझाता और आगे बढ़ जाता।

(11) खंड का संक्षेपण करें।

दोपहर की गरमी में स्कूटर की ईंतज़ार करनेवीली लेखिका के पास एक युवा स्कूटरवाला आकर खड़ा हो गया। वह राहगीरों को अपनी मश्क से पानी देकर प्यास बुझाता था।

(12) संक्षेपण केलिए शीर्षक लिखें।

प्यास बुझानेवाला स्कूटर।

(II) विकास मार्ग से ………… मधर हो जाते।

(1) लेखिका स्कूटर में कहाँ से कहाँ तक चला?

विकास मार्ग से पार्लियामेंट स्ट्रीट तका।

(2) लेखिका बीच-बीच में गाड़ी रोककर पानी पिलाता था। इस समय लेखिका ने किस बात पर विशेष ध्यान दिया ?

वह स्कूटरवाला पानी की रेहड़ी से पैसा अदाकर पानी खरीदकर दो बार मशक भरवाया।

(3) स्कूटरवाले को देखकर लेखिका ने क्या सोचा?

लेखिका ने सोचा शायद यह स्कूटरवाला एक गहरे कुए की माफ़िक होगा, जिसके दिल में प्यार बसता है।

(4) लेखिका को क्यों स्कूटरवाला एक गहरा कुआँ जैसा लगा?

लोग प्यास बुझाने केलिए कुए का सहारा लेता है। इस स्कूटरवाले के मन प्यार से भरा हुआ है।वह दूसरों को पानी पिलाकर प्यास बुझाता है।

(5) बाद में उस स्कूटरवाले का नाम क्या पड़ गया?

मशकवैलौ स्कूटर

HSSLiVE.IN

(6) खंड का संक्षेपण करें।

राहगीरों का प्यास बुझाने केलिए वह पैसे देकर मशक भरवाता रहा। लेखिका को वह एक कुए जैसे लगा। बाद में उसे पता चला कि उसका नाम ही "मशकवाला स्कूटर" पड़ गया।

(7) खंड केलिए उचित शीर्षक लिखें।

मशकवाला स्कूटर।

(III) जब घर के ………पुण्य मिल ही गया।

(1) आजकल के घरों में बुजुर्गों की अवस्था कैसे है?

आजकल घर के बुजुर्गों को कोई भी पानी नहीं पिलाता और पानी माँगने पर अँगारों जैसी जलती आँखें दिखाई जाती हैं।

(2) लेखिका को वह स्कूटरवाला क्यों पीर जैसा लगा?

आजकल घर के बुजुर्ग लोग पानी से वंचित है और पानी माँगने पर आँगारों जैसी जलती आँखें दिशाई जाती है। ऐसे ज़माने में स्कूटरवाला राहगीरों के पास जाकर उनकी प्यास बुझाता है। खास बात यह है कि वह अपने पैसे लेकर मशक में पानी भरकर राहगीरों को देता है और वह उनसे पैसे स्वीकार नहीं करते।इसलिए लेखिका को पीर जैसा लगा।

(3) स्कूटरवाले का बचपन कैसा था?

वह एक पितृविहीन लड़का था। वह स्ट्रीट लाइट के नीचे बैठकर पढ़ता था। स्कूटर चलाकर रोटी कमाता था।

HSSLiVE.IN

(4) स्कूटरवाला रोटी कैसे कमाता था?

अपनी स्कूटर चलाकर।

(5) स्कूटरवाले के घर में उनके अलावा कौन थे?

आपनी माँ।

(6) माँ का उपदेश क्या था?

"तू पानी पिलाया कर, पुण्य मिलता है।"

(7) स्कूटरवाले की माँ की राय में पुण्य कैसे मिलता है?

दूसरों को पानी पिलाने से।

(8) अपनी मशक से स्कूटरवाले का रिश्ता कब जुड़ा हुआ है?

अपनी माँ के उपदेश सुनने के बाद।

(9) उन्हें पुण्य कैसे मिला?

दूसरों को पानी पिलाकर पुण्य मिला।

(10) खंड का संक्षेपण करें।

दूसरों को पानी पिलानेवाला स्कूटरवाला पीर ही है। वह पितृविहीन बोलक था जो स्कूटर चलाकर रोटी कमाता था। अपनी माँ के उपदेश से दूसरों की प्यास बुझाते रहा।

(11) संक्षेपण केलिए शीर्षक लिखें।

माँ का उपदेश।

(IV) लाखों लोगों .... मुलाकात ही है?

(1) स्कूटरवाले की राय में वह कैसे स्नातक हो गया?

लाखों लोगों की दुआओं से।

(2) स्कूटरवाले को सुख कब मिलता है?

दूसरों को पानी पिलाते समय।

HSSLiVE.IN

(3) स्कूटरवालो कैसे अपने मन का बादशाह बन गए?

वह अपनी मर्जी से स्कूटर चलाकर रोटी कमाता है।साथ ही अपनी कमाई से दूसरों को भी पानी पिलाता है।

HSSLiVE.IN

(4) स्कूटरवाले कब खुश होता है?

लेखिका जैसे लोग उसकी स्कूटर में बैठते वक्त।

(5) लेखिका को क्यों ऐसा लगा कि वह एक आदमी न होकर भटका हुआ पीर है?

आपा-धापी की इस दुनिया में वह स्कूटरवाला खुशी बाँटता फिर रहा है।दूसरों को पानी पिलाकर दूसरों के दिल में जगह बनाता है।

(6) स्कूटरवाले कैसे दिल के रिश्ते जोड़ता है?

वह लोगों के दिल में जगह बनाकर, दिल के रिश्ते जोड़ता हैं।

(7) "वह पूजा केलिए कहीं भी न बैठकर लोगों के दिल में जगह बनाता है।" कौन? कैसे?

स्कूटरवाला। वह अपनी कमाई से दूसरों को पानी पिलाता है और दिल के रिश्ते जोड़ता हैं। इस तरह वह लोगों का आराध्य बन गया है।

अनुवर्ती कार्य:

(1) "मशकवाला स्कूटर" के बारे में अखबार में एक विशेष समाचार छापा जाता है। वह किस तरह होगा?

सहायक संकेत:

- माँ का उपदेश – राहगीरों को पानी पिलाना - गरीबी में जीवन बिताना - दिल के रिश्ते ज़ोड़ना।

मशकवाला स्कूटर

दिल्ली: आजकल के स्वार्थता भरी दुनिया में दिल्ली का यह स्कूटरवाला जैसा युवक अन्य त्र दुर्लभ है।पिताजी की मृत्यु के बाद वह स्कूटर चलाकर आजीविका कमाता था। घर में माँ भी है। बचपन में उनके माँ ने उपदेश दिया - "तू पानी पिलाया कर, पुण्य मिलता है।" उसने उस उपदेश को स्वीकार करके उस दिन से राहगीरों को पानी पिलाना शुरु किया था। खास बात यह है कि कभी-कभी दूसरों के प्यास बुझाने केलिए अपनी कमाई से पैसे देकर पानी खरीदकर मशक भरवाता है और प्यासों को पानी मुफ्त देता है।

स्वार्थता भरी इस दुनिया में यह युवा लोगों के प्यास बुझाकर रिश्ता जुड़ाते है। बुढ़ापे में बुजुर्ग लोग, चाहे वह जन्मनेवाला माता-पिता हो, बोझ समझकर वृद्ध सदनों में छोड़नेवाले इस पीढ़ि में यह युवक सचमुच अलग व्यक्तित्व है, जो केवल अपनी माँ के उपदेश सुनकर लोगों के दिल में जगह बनाकर पीर ही है।

परीक्षा केंद्रित कुछ और प्रश्न। इनके उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करें:

(1) 'दोपहर की गर्मी में मैं पटरी पर खड़ी होकर स्कूटर का इंतज़ार कर रही थीं, तो मेरे कानों में एक आवाज़ गूँजी.....'। लेखिका और स्कूटरवाले के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

स्कूटरवाला : कहाँ जाइएगा?

HSSLiVE.IN

लेखिका : कोनाट प्लेस में....
....

HSSLiVE.IN

(2) राहगीरों को पानी पिलाने केलिए स्कूटरवाला रेहड़ी से अपने मशक भरवाया। उस समय स्कूटरवाला और रेहड़ीवाले के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

रेहड़ीवाला : क्या चाहिए?

स्कूटरवाला : मेरे मशक भर पानी...

....

(3) घर पहुँचकर लेखिका अपने पति से स्कूटरवाले के बारे में कहते है। दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

पति : इतना देरी क्यों हुई?

पत्नी : बीच में एक खास व्यक्तित्व को देखा।

....

(4) 'मशकवाला स्कूटर' को देखकर लेखिका आश्चर्य चकित हो गया। वह अपनी डायरी में जिक्र करती हैं। डायरा का वह पन्ना कल्पना करके लिखें।

बुधवार 12-6-2015
आज गर्मी ज़्यादा अधिक था। घर पहुँचने केलिए......

(5) 'मैं ने उसे बरामदे में बिढ़ाया और उससे कुशलक्षेम पूछने लगी।' स्कूटरवाला और लेखिका के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

लेखिका : तुम कहाँ रहते हो?

स्कूटरवाला : शहर के पास के गाँव में....

....

HSSLiVE.IN

(6) स्कूटरवाला ने अपनी माँ की प्रेरणा से राहगीरों को पानी पिलाना शुरु किया था। इस संबंध में स्कूटरवाला और माँ के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(7) लेखिका को घर छोड़कर स्कूटरवाला अपना घर पहुँचती हैं। वह अपनी माँ से लेखिका के बारे में कहती है। उन दोनों के बीच का संभावित वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

माँ : क्या हुआ? बहुत खुशी हैं....

स्कूटरवाला : आज खूब सवार मिला...

....

(8) लेखिका से मुलाकात के बाद घर पहुँचकर स्कूटरवाला अपनी डायरी लिखते हैं, जिसमें वह लेखिका के बारे में भी जिक्र करती हैं। डायरी का वह पन्ना कल्पना करके लिखें।

शनिवार 10-02-2015
आज घर से निकलने में थोडी देरी हो गया था। मन में आशंका थी कि यदि कोई यात्री मिलेगी

HSSLiVE.IN

या नहीं....

(9) लेखिका अपनी सहेली को एक खत लिखते हैं, जिसमें वह अपने परिचित स्कूटरवाला के बारे में भी लिखना चाहा। वह पत्र कल्पना करके लिखें।

दिल्ली, 13-7-2015 HSSLiVE.IN प्रिय जान्हवी, तुम कैसी हो? सकुशल है न? मैं यहाँ खुशी हुँ। एक खास बात बताने केलिए.......

(10) सालों बाद वह स्कूटरवाला अपनी आत्मकथा लिखना चाहा, जिसमें वह लेखिका के बारे में भी लिखते हैं। वह आत्मकथांश तैयार करें।

आवारा बचपन में ही पिता की मृत्यु हुई थी। घर में केवल माँ और मैं। अकेला जीवन...

(11) कई साल बीत गए। स्कूटरवाला अब विवाहित हैं। वह अपनी पत्नी से अपनी कहानी बताती हैं। उन दोनों के बीच का संभावित वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

पत्नी : सुना है, आपका नाम मशकवाला स्कूटर हैं।
पति : हाँ, यह तो स्कूटर चलाते समय में....
....

HSSLiVE.IN